अमरकांत

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» अमरकांत: परिचय और साहित्यिक यात्रा

प्रश्न 1 (आसान). अमरकांत का जन्म किस प्रदेश में हुआ था?

उत्तर – उत्तर प्रदेश

प्रश्न 2 (आसान). अमरकांत ने अपनी बी.ए. की डिग्री किस विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी?

उत्तर – इलाहाबाद विश्वविद्यालय

प्रश्न 3 (मध्यम). प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़ने के बाद अमरकांत के लेखन में क्या बदलाव आया होगा?

उत्तर – प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़ने के बाद अमरकांत ने समाज की समस्याओं और वास्तविकताओं पर आधारित कहानियाँ लिखना शुरू किया होगा, जिससे उनके लेखन में सामाजिक चेतना और यथार्थवाद बढ़ा।

प्रश्न 4 (कठिन). अमरकांत ने पत्रकारिता से अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत क्यों की होगी? क्या इससे उनके लेखन पर कोई विशेष प्रभाव पड़ा?

उत्तर – अमरकांत ने पत्रकारिता से शुरुआत इसलिए की होगी क्योंकि यह उन्हें समाज से सीधे जुड़ने, उसकी समस्याओं को करीब से जानने और उन्हें अपनी कहानियों में उतारने का अवसर देता था। इससे उनके लेखन में 'शहरी और ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण' और 'मध्यवर्ग के जीवन की वास्तविकता' गहरी रूप से उभरी, क्योंकि पत्रकारिता उन्हें इन विषयों की गहरी समझ प्रदान करती थी।

» अमरकांत की साहित्यिक विशेषताएँ

प्रश्न 5 (आसान). अमरकांत किस साहित्यिक आंदोलन के प्रमुख कहानीकार थे?

उत्तर – नयी कहानी आंदोलन

प्रश्न 6 (आसान). अमरकांत की कहानियों की भाषा कैसी थी?

उत्तर – सहज और सजीव

प्रश्न 7 (मध्यम). अमरकांत ने अपनी कहानियों में किन दो प्रकार के जीवन का चित्रण किया है?

उत्तर – शहरी और ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण।

प्रश्न 8 (कठिन). अमरकांत अपनी कहानियों में सामाजिक बुराइयों को कैसे दिखाते थे? कोई एक उदाहरण दो।

उत्तर – वे समाज में व्याप्त 'अमानवीयता, हृदयहीनता, पाखंड, आडंबर' जैसी बुराइयों को सीधे और सच्ची घटनाओं के माध्यम से दिखाते थे। जैसे, 'दोपहर का भोजन' में परिवार की गरीबी और सिधेश्वरी का झूठ बोलना, समाज की मजबूरी और दिखावे को दर्शाता है।

» प्रमुख रचनाएँ और सम्मान

प्रश्न 9 (आसान). अमरकांत जी के दो कहानी संग्रहों के नाम बताइए।

उत्तर – 'ज़िंदगी और जोंक' और 'देश के लोग'।

प्रश्न 10 (आसान). अमरकांत जी को किस वर्ष साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला?

उत्तर – सन 2007 में।

प्रश्न 11 (मध्यम). अमरकांत जी को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार किसके साथ संयुक्त रूप से दिया गया था?
उत्तर – श्री लाल शुक्ल जी के साथ।

प्रश्न 12 (कठिन). अमरकांत जी के दो उपन्यासों के नाम लिखिए जिनके नाम में 'दिन' या 'दीवार' शब्द आता हो।
उत्तर – 'काले उजले दिन' और 'बीच की दीवार'।

» 'दोपहर का भोजन' कहानी का परिचय

प्रश्न 13 (आसान). इस कहानी की मुख्य पात्र का नाम क्या है?
उत्तर – सिद्धेश्वरी

प्रश्न 14 (आसान). यह कहानी किस वर्ग के परिवार के बारे में है?
उत्तर – निम्न मध्यवर्गीय परिवार

प्रश्न 15 (मध्यम). सिद्धेश्वरी अपने परिवार से गरीबी के अहसास को क्यों छुपाती है?
उत्तर – वह अपने परिवार का हौसला बनाए रखना चाहती है और उन्हें गरीबी की कड़वी सच्चाई से बचाए रखना चाहती है।

प्रश्न 16 (कठिन). इस कहानी में 'शिल्प की सादगी और सहज संकेतों' का क्या महत्व है?
उत्तर – यह कहानी बहुत ही सरल और सीधे तरीके से लिखी गई है, लेकिन छोटे-छोटे संकेतों (जैसे सिद्धेश्वरी का पानी पीकर 'हाय राम' कहना) के माध्यम से ही लेखक ने गरीबी और माँ के संघर्ष को बहुत गहराई से व्यक्त किया है, जिससे कहानी और भी मार्मिक बन जाती है।

» सिद्धेश्वरी का संघर्ष और त्याग

प्रश्न 17 (आसान). कहानी में सिद्धेश्वरी की सबसे पहली ज़रूरत क्या थी, जिसे उसने अनदेखा किया?
उत्तर – प्यास और अपनी भूख।

प्रश्न 18 (आसान). सिद्धेश्वरी ने मोहन से क्या झूठ बोला?
उत्तर – उसने मोहन से कहा कि उसके भैया ने सिर्फ एक रोटी खाई थी।

प्रश्न 19 (मध्यम). सिद्धेश्वरी अपने बच्चों से झूठ क्यों बोलती है?
उत्तर – वह अपने बच्चों से झूठ इसलिए बोलती है ताकि वे भोजन की कमी महसूस न करें और अपना पूरा भोजन खा लें, क्योंकि उसके पास सभी के लिए पर्याप्त खाना नहीं है।

प्रश्न 20 (कठिन). सिद्धेश्वरी के त्याग और संघर्ष को वर्तमान समाज में आप किस तरह की चुनौतियों से जोड़कर देखते हैं?
उत्तर – आज भी कई निम्न-मध्यवर्गीय परिवारों में या ग्रामीण क्षेत्रों में, परिवार की मुखिया महिलाएँ अक्सर अपनी ज़रूरतों को पीछे रखकर परिवार के सदस्यों की ज़रूरतों को पूरा करने में लगी रहती हैं। खाद्य सुरक्षा, आर्थिक तंगी और सामाजिक अपेक्षाएँ उनके संघर्ष का हिस्सा होती हैं।

» रामचंद्र और मोहन की विवशता

प्रश्न 21 (आसान). कहानी में कौन से दो बेटे अपनी भूख छुपाने की कोशिश करते हैं?
उत्तर – रामचंद्र और मोहन।

प्रश्न 22 (आसान). रामचंद्र ने अपनी माँ से क्या कहकर और रोटी लेने से मना किया?
उत्तर – उसने कहा, 'मेरा पेट पहले ही भर चुका है।'

प्रश्न 23 (मध्यम). सिद्धेश्वरी मोहन के बारे में क्यों झूठ बोलती है कि वह पढ़ने गया है?
उत्तर – सिद्धेश्वरी जानती है कि मोहन भूखा है और घर में भोजन कम है। वह रामचंद्र को यह नहीं बताना चाहती कि मोहन घर पर नहीं है और भूखा है, ताकि वह चिंतित न हो और जो खाना है उसे खा ले।

प्रश्न 24 (कठिन). रामचंद्र की यह विवशता, सिद्धेश्वरी की विवशता से किस प्रकार जुड़ी हुई है? दोनों के त्याग में क्या समानता है?

उत्तर – रामचंद्र की विवशता सिद्धेश्वरी की विवशता से सीधे तौर पर जुड़ी है। सिद्धेश्वरी भूखी रहकर बच्चों को खिलाती है, और रामचंद्र अपनी भूख दबाकर दूसरों के लिए खाना छोड़ता है। दोनों ही अपने परिवार के सदस्यों की भूख मिटाने और उनकी चिंता कम करने के लिए व्यक्तिगत त्याग करते हैं और 'झूठ' का सहारा लेते हैं। दोनों ही गरीबी की कड़वी सच्चाई को छिपाने की कोशिश करते हैं।

» मुंशी चंद्रिका प्रसाद की स्थिति और व्यवहार

प्रश्न 25 (आसान). मुंशी जी की उम्र कितनी थी और वे कितने के लगते थे?

उत्तर – उनकी उम्र लगभग पैंतालीस वर्ष थी, लेकिन वे पचास-पचपन के लगते थे।

प्रश्न 26 (आसान). मुंशी जी ने सिद्धेश्वरी के रोटी देने के प्रस्ताव पर क्या बहाना बनाया?

उत्तर – उन्होंने कहा कि पेट काफी भर चुका है और अन्न व नमकीन चीज़ों से तबीयत ऊब गई है।

प्रश्न 27 (मध्यम). मुंशी चंद्रिका प्रसाद का 'जूतों को खस-खस घसीटते' हुए आना उनकी किस मानसिक स्थिति को दर्शाता है?

उत्तर – यह उनकी गहरी निराशा, थकावट और जीवन की मुश्किलों से हार मान लेने जैसी मानसिक स्थिति को दर्शाता है।

प्रश्न 28 (कठिन). सिद्धेश्वरी द्वारा बच्चों के बारे में बोले गए झूठों से मुंशी जी के 'व्यवहार' में क्या बदलाव आया और क्यों?

उत्तर – सिद्धेश्वरी के झूठों से मुंशी जी के चेहरे पर थोड़ी 'चमक' आई और वे शर्माते हुए बच्चों की तारीफ करने लगे। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि सिद्धेश्वरी के झूठों ने उन्हें थोड़ी उम्मीद और खुशी दी, जिससे उनकी निराशा थोड़ी कम हुई।

» सिद्धेश्वरी के झूठ और परिवार का जुड़ाव

प्रश्न 29 (आसान). सिद्धेश्वरी ने प्रमोद के लिए अपनी रोटी क्यों बांटी?

उत्तर – प्रमोद को भूखा देखकर, ताकि वह भूखा न रहे।

प्रश्न 30 (आसान). मुंशी जी ने रोटी न लेने के लिए क्या बहाना बनाया?

उत्तर – उन्होंने कहा कि 'पेट काफ़ी भर चुका है' और 'अन्न और नमकीन चीज़ों से तबीयत ऊब भी गई है'।

प्रश्न 31 (मध्यम). सिद्धेश्वरी का अपने बेटों के बारे में झूठ बोलना उसके किस स्वभाव को दर्शाता है?

उत्तर – यह उसके ममतामयी, त्यागपूर्ण और परिवार को जोड़ने वाले स्वभाव को दर्शाता है, जो अभाव में भी रिश्तों को सहेजती है।

प्रश्न 32 (कठिन). कहानी के अंत में सिद्धेश्वरी की आँखों से आँसू क्यों टपकने लगते हैं?

उत्तर – सिद्धेश्वरी की आँखों से आँसू परिवार की भूख, अपना त्याग और अभाव में भी परिवार को एकजुट रखने की उसकी अथक कोशिशों की पीड़ा के कारण टपकते हैं।

» गरीबी का यथार्थवादी चित्रण

प्रश्न 33 (आसान). कहानी में सिद्धेश्वरी के कपड़ों से गरीबी का कौन सा पहलू उजागर होता है?

उत्तर – सिद्धेश्वरी का 'फटा, गंदा ब्लाउज' उसके पास साफ और पर्याप्त कपड़ों की कमी को दर्शाता है, जो गरीबी की निशानी है।

प्रश्न 34 (आसान). मुंशी चंद्रिका प्रसाद की 'तार-तार' बनियान क्या बताती है?

उत्तर – यह बताती है कि मुंशी जी के पास इतने पैसे नहीं हैं कि वे नए कपड़े खरीद सकें, इसलिए उन्हें पुरानी और फटी हुई बनियान से ही काम चलाना पड़ता है।

प्रश्न 35 (मध्यम). प्रमोद के 'पेट हंडिया की तरह फूला हुआ' होने का वर्णन गरीबी से कैसे जुड़ा है?
उत्तर – यह कुपोषण का स्पष्ट संकेत है, जो गरीबी के कारण बच्चों को पर्याप्त और पौष्टिक भोजन न मिलने से होता है। अक्सर ऐसे बच्चों के पेट में कीड़े हो जाते हैं जिससे पेट फूल जाता है।

प्रश्न 36 (कठिन). कहानी के पात्रों के शारीरिक वर्णन और पहनावे से लेखक 'गरीबी का यथार्थवादी चित्रण' कैसे करते हैं? विस्तार से समझाइए।
उत्तर – लेखक प्रमोद के 'हड्डीदार शरीर' और 'फूले पेट' से कुपोषण, सिद्धेश्वरी के 'गंदे, फटे ब्लाउज' से कपड़ों का अभाव, और मुंशी जी की 'तार-तार बनियान' से आर्थिक तंगी दिखाते हैं। ये छोटे-छोटे, लेकिन सजीव वर्णन गरीबी को सीधे पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठक उस परिवार के अभाव और संघर्ष को महसूस कर पाते हैं। ये सिर्फ़ गरीबी को बताना नहीं, बल्कि उसे दिखाना है, जो 'यथार्थवादी चित्रण' का उदाहरण है।

» कहानी का प्रतीकात्मक अंत

प्रश्न 37 (आसान). सिद्धेश्वरी के अंत में रोने का एक मुख्य कारण क्या था?
उत्तर – उसकी गरीबी, बेबसी और परिवार के लिए उसका संघर्ष।

प्रश्न 38 (आसान). कहानी में 'रोटी' किसका प्रतीक बन जाती है?
उत्तर – जीवन, भूख और परिवार के पोषण की ज़िम्मेदारी का।

प्रश्न 39 (मध्यम). सिद्धेश्वरी का अपनी रोटी को दो टुकड़ों में बांटना किस मानवीय भावना को दर्शाता है?
उत्तर – माँ की ममता, निस्वार्थ त्याग और बलिदान को।

प्रश्न 40 (कठिन). कहानी का प्रतीकात्मक अंत पाठक को किस प्रकार सोचने पर विवश करता है?
उत्तर – यह अंत पाठक को गरीबी की भीषणता, एक माँ के अदम्य साहस और उसके अंदर की अनकही पीड़ा के बारे में गहराई से सोचने पर विवश करता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. अमरकांत का मूल नाम क्या था और उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा की शुरुआत कैसे की?

› पहला कदम: हमें याद करना है कि 'अमरकांत' उनका साहित्यिक नाम था, उनका 'मूल नाम श्रीराम वर्मा' था।

› दूसरा कदम: अब उनकी 'साहित्यिक यात्रा की शुरुआत' पर ध्यान दें। उन्होंने 'पत्रकारिता से' इसकी शुरुआत की थी।

› तीसरा कदम: उन्होंने 'आगरा से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र सैनिक के संपादकीय विभाग में' काम किया था, और यहीं से वे लेखन की दुनिया से गहराई से जुड़े।

उत्तर – अमरकांत का मूल नाम श्रीराम वर्मा था और उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा की शुरुआत पत्रकारिता से की, पहले दैनिक 'सैनिक' में काम करके।

उदाहरण 2. अमरकांत अपनी कहानियों में समाज के किस वर्ग पर विशेष ध्यान देते थे और क्यों?

› अमरकांत जी 'नयी कहानी आंदोलन' के प्रमुख कहानीकार थे, जिसका उद्देश्य समाज की सच्चाइयों को उजागर करना था।

› उन्होंने अपनी कहानियों में 'मुख्यतः मध्यवर्ग वेफ जीवन की वास्तविकता और विसंगतियों को व्यक्त करनेवाले' कहानीकार के रूप में पहचान बनाई।

› मध्यवर्ग भारतीय समाज का वह हिस्सा है जो रोज़मर्रा की चुनौतियों, आर्थिक तंगी और सामाजिक दिखावे के बीच अपनी पहचान बनाए रखने का संघर्ष करता है।

› अमरकांत जी इस वर्ग की सूक्ष्म भावनाओं, संघर्षों और आशाओं को 'यथार्थवादी ढंग से' प्रस्तुत करते थे, ताकि पाठक उनसे जुड़ाव महसूस कर सकें और समाज की वास्तविक स्थिति को समझ सकें।

उत्तर – अमरकांत जी अपनी कहानियों में विशेष रूप से मध्यवर्ग के जीवन पर ध्यान केंद्रित करते थे। वे इस वर्ग की वास्तविकताओं, विसंगतियों और संघर्षों को यथार्थवादी ढंग से चित्रित करते थे, क्योंकि वे मानते थे कि कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि समाज का दर्पण होनी चाहिए। उनके लिए मध्यवर्ग की ज़िंदगी समाज की सच्ची तस्वीर पेश करती थी।

उदाहरण 3. अमरकांत जी की किसी एक कहानी संग्रह और एक उपन्यास का नाम बताइए, और उन्हें किस उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला?

› पहले कहानी संग्रह का नाम याद करते हैं: 'ज़िंदगी और जोंक' उनका एक कहानी संग्रह है।

› अब एक उपन्यास का नाम: 'सूखा पत्ता' या 'इन्हीं हथियारों से' कोई भी एक बता सकते हैं।

› साहित्य अकादमी पुरस्कार उन्हें 'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास के लिए मिला था।

उत्तर – कहानी संग्रह: 'ज़िंदगी और जोंक'। उपन्यास: 'इन्हीं हथियारों से'। साहित्य अकादमी पुरस्कार उन्हें 'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास के लिए मिला।

उदाहरण 4. कहानी 'दोपहर का भोजन' का मुख्य विषय क्या है?

› पहले कहानी के नाम पर ध्यान दें: 'दोपहर का भोजन'। यह सीधा खाने से जुड़ा है, जो गरीबी की ओर इशारा करता है।

› अब देखें कि कहानी के मुख्य पात्र कौन हैं और वे क्या कर रहे हैं। सिद्धेश्वरी एक माँ है जो परिवार चला रही है।

› सोचो, एक माँ अपने परिवार को गरीबी में कैसे संभालेगी? वह सच्चाई छुपाएगी, सबको खिलाएगी, खुद कम खाएगी।

› तो मुख्य विषय है निम्न मध्यवर्गीय परिवार की गरीबी, और उस गरीबी में भी एक माँ का अपने परिवार को जोड़े रखने का अथक प्रयास।

› इसीलिए, कहानी का मुख्य विषय 'गरीबी से जूझते निम्न मध्यवर्गीय परिवार का संघर्ष और सिद्धेश्वरी का अपने परिवार को जोड़े रखने का प्रयास' है।

उत्तर – 'दोपहर का भोजन' कहानी का मुख्य विषय गरीबी से जूझते एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार का संघर्ष और सिद्धेश्वरी का अपने परिवार को जोड़े रखने का प्रयास है।

उदाहरण 5. सिद्धेश्वरी ने अपने बेटे रामचंद्र से क्या झूठ बोला और क्यों?

› सिद्धेश्वरी ने रामचंद्र से कहा कि उसका छोटा भाई प्रमोद खाना खा चुका है।

› उसने यह झूठ इसलिए बोला ताकि रामचंद्र यह न सोचे कि प्रमोद भूखा है और अपनी रोटी का हिस्सा प्रमोद के लिए न छोड़ दे।

› वह चाहती थी कि रामचंद्र अपना पूरा भोजन खा ले, और परिवार के सदस्यों के बीच भोजन की कमी महसूस न हो।

उत्तर – सिद्धेश्वरी ने रामचंद्र से कहा कि प्रमोद ने खाना खा लिया है, ताकि रामचंद्र अपनी रोटी का त्याग न करे और पूरा भोजन खाए।

उदाहरण 6. रामचंद्र ने 'पेट भर चुका है' कहकर कितनी रोटियां खाईं और उसके इस कथन के पीछे क्या 'विवशता' थी?

› पहले, हम देखेंगे कि 'सि(ेश्वरी ने खाने की थाली लाकर सामने रख दी' जिसमें 'कुल दो रोटियाँ' थीं।

› फिर, जब 'थाली में जब रोटी का केवल एक टुकड़ा शेष रह गया', तो सिद्धेश्वरी ने 'एक रोटी और लाती हूँ?' पूछा।

› रामचंद्र ने जवाब दिया, 'नहीं-नहीं, ज़रा भी नहीं। मेरा पेट पहले ही भर चुका है। मैं तो यह भी छोड़नेवाला हूँ। बस, अब नहीं।'

› यहाँ उसकी 'विवशता' यह थी कि वह जानता था घर में खाने की कमी है। यदि वह और रोटी माँगेगा, तो मोहन या छोटे भाई प्रमोद के लिए कम पड़ जाएगी। वह अपनी माँ को 'अधिक खिलाकर बीमार डालने की तबीयत है क्या?' कहकर अपनी भूख छुपाता है, ताकि माँ चिंतित न हो।

उत्तर – रामचंद्र ने कुल दो रोटियां खाईं। उसकी 'विवशता' यह थी कि घर में खाने की कमी थी, और वह अपनी माँ को और ज़्यादा परेशान नहीं करना चाहता था, इसलिए उसने झूठ बोला कि उसका पेट भर गया है।

उदाहरण 7. मुंशी चंद्रिका प्रसाद ने सिद्धेश्वरी से रोटी लेने से क्यों इनकार किया, जबकि वे भूखे थे?

› पहला, मुंशी जी को नौकरी से निकाल दिया गया था, जिससे वे आर्थिक रूप से बहुत कमज़ोर हो गए थे।

› दूसरा, वे अपनी पत्नी और बच्चों के सामने अपनी लाचारी और बेबसी दिखाना नहीं चाहते थे। उन्हें शर्म आ रही थी।

› तीसरा, घर में रोटियाँ कम थीं। वे जानते थे कि अगर वे ज़्यादा रोटी लेंगे, तो उनके बच्चों को कम मिलेगी, इसलिए उन्होंने त्याग किया।

› चौथा, वे अपने आत्मसम्मान को बचाए रखना चाहते थे और नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें कमज़ोर समझे।

› आखिर में, यह उनका एक तरीका था अपनी निराशा और हताशा को छिपाने का।

उत्तर – मुंशी चंद्रिका प्रसाद ने अपनी बेरोज़गारी के कारण हुई हताशा, आत्मसम्मान और बच्चों के प्रति चिंता के चलते भूखे

होते हुए भी रोटी लेने से इनकार किया, ताकि परिवार को रोटी की कमी महसूस न हो और उनकी लाचारी सबके सामने न आए।

उदाहरण 8. सिद्धेश्वरी ने मुंशी जी से कसम दिलवाकर एक और रोटी लेने पर क्या कहा और मुंशी जी ने उसे कैसे टाल दिया? इसके पीछे सिद्धेश्वरी का क्या उद्देश्य था?

› मुंशी जी का पेट भर चुका था, फिर भी सिद्धेश्वरी ने उनसे 'बड़का की कसम, एक रोटी देती हूँ। अभी बहुत-सी हैं' कहकर रोटी लेने को कहा।

› मुंशी जी ने पहले तो 'पत्नी की ओर अपराधी वेफ समान तथा रसोई की ओर कनखी से देखा' और फिर कहा, 'रोटी... रहने दो, पेट काप़्ाफी भर चुका है। अन्न और नमकीन चीशों से तबीयत ऊब भी गई है।'

› बाद में कसम रखने के लिए गुड़ के रस का बहाना बनाकर रोटी को टाला। उन्होंने कहा, 'तुम्हारी कसम भी रह जाएगी, शायका भी बदल जाएगा, साथ-ही-साथ हाशमा भी दुरुस्त होगा।'

› सिद्धेश्वरी का उद्देश्य था कि मुंशी जी को किसी भी तरह एक और रोटी खिला दे, ताकि उन्हें कमजोरी महसूस न हो और परिवार के अभाव की सच्चाई भी सामने न आए।

उत्तर – सिद्धेश्वरी ने कसम देकर मुंशी जी को रोटी देने की कोशिश की, ताकि वे और खा सकें। मुंशी जी ने बहाने से मना किया क्योंकि वे जानते थे कि रोटियाँ कम हैं, और वे स्वयं भूखे रहने को तैयार थे। सिद्धेश्वरी का उद्देश्य अपने पति की भूख को शांत करना और अभाव को छुपाना था, जिससे परिवार में एकजुटता बनी रहे।

उदाहरण 9. कहानी में प्रमोद के चित्रण से गरीबी के 'यथार्थवादी चित्रण' को स्पष्ट कीजिए।

› पहला कदम है, कहानी में प्रमोद से संबंधित वाक्यों को पहचानना। लेखक ने लिखा है: 'लड़का नंग-धडं़्ग पड़ा था। उसके गले तथा छाती की हड्डियां साफ दिखाई देती थीं। उसके हाथ-पैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे तथा बेजान पड़े थे और उसका पेट हंडिया की तरह फूला हुआ था। उसका मुंह खुला हुआ था और उस पर अनगिनत मक्खियां उड़ रही थीं।'

› दूसरा कदम है, इन वाक्यों का मतलब समझाना कि ये गरीबी को कैसे दिखाते हैं। 'हड्डियां साफ दिखाई देती थीं' और 'हाथ-पैर सूखे' बताते हैं कि बच्चे को ठीक से भोजन नहीं मिलता, वह कुपोषित है।

› तीसरा कदम है, 'पेट हंडिया की तरह फूला हुआ था' और 'मुंह पर मक्खियां' जैसे विवरण बताते हैं कि बच्चे को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हैं (संभवतः पेट में कीड़े) और घर में साफ-सफाई का अभाव है। ये सभी बातें सीधे-सीधे उस परिवार की घोर गरीबी और अभाव को दर्शाती हैं, जहां एक छोटे बच्चे को भी सही पोषण और देखभाल नहीं मिल पाती।

उत्तर – प्रमोद के 'नंग-धड़ंग', 'हड्डीदार शरीर', 'सूखे-बेजान हाथ-पैर' और 'हंडिया की तरह फूले पेट' का चित्रण कहानी में गरीबी का यथार्थवादी रूप दिखाता है, जहां बच्चे को भरपेट खाना भी नहीं मिलता और वह कुपोषण का शिकार है।

उदाहरण 10. सिद्धेश्वरी द्वारा अपनी रोटी को प्रमोद के लिए दो टुकड़ों में बांटने और फिर आँसू बहाने का प्रतीकात्मक महत्व क्या है?

› पहला चरण: सिद्धेश्वरी का रोटी को दो टुकड़ों में बांटना। यह दिखाता है कि वह अपने हिस्से की रोटी भी बच्चे को दे रही है। यह उसकी निस्वार्थ 'माँ ममता और बलिदान' का प्रतीक है।

› दूसरा चरण: एक टुकड़ा अलग रखना और दूसरा अपनी जूठी थाली में लेना। यह उसकी 'मजबूरी' और 'बेबसी' को दर्शाता है, कि वह यह भी नहीं दिखा सकती कि उसने बच्चे को अपना हिस्सा दिया है।

› तीसरा चरण: पहला ग्रास मुँह में रखते ही उसकी आँखों से आँसू चूने लगना। ये आँसू सिर्फ़ भूख के नहीं हैं, बल्कि उसके 'समूचे जीवन के संघर्ष', 'पीड़ा', 'त्याग' और 'लाचारी' के 'प्रतीक' हैं, जो शब्दों में व्यक्त नहीं किए जा सकते।

› निष्कर्ष: यह पूरा दृश्य 'गरीबी में माँ के अदम्य साहस', 'त्याग' और 'आंतरिक पीड़ा' का मार्मिक और गहरा प्रतीकात्मक चित्रण है। यह 'परिवार को जोड़ने का अनथक प्रयास' भी है।

उत्तर – सिद्धेश्वरी द्वारा रोटी को दो टुकड़ों में बांटना उसका 'निस्वार्थ त्याग और माँ की ममता' का प्रतीक है, और उसके आँसू 'गरीबी, बेबसी और जीवन भर के संघर्ष की गहरी पीड़ा' को प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करते हैं, जिसे शब्दों में कहना संभव नहीं।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• अमरकांत जी की साहित्यिक विशेषताओं पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। हर विशेषता को एक-दो उदाहरणों के साथ समझाना याद रखना, खासकर उनकी 'यथार्थवादी शैली' और 'मध्यवर्गीय जीवन' पर फोकस।

• अमरकांत जी की रचनाओं और उन्हें मिले सम्मानों के नाम बोर्ड परीक्षा में अक्सर सीधे प्रश्न के रूप में पूछे जाते हैं। विशेषकर 'इन्हीं हथियारों से' और दोनों पुरस्कारों के नाम व वर्ष याद रखें।

• यह कहानी अक्सर बोर्ड परीक्षा में 'मूल संवेदना' या 'केंद्रीय भाव' पर प्रश्न के लिए पूछी जाती है, इसलिए सिद्धेश्वरी के चरित्र और गरीबी के चित्रण पर विशेष ध्यान देना।

• सिद्धेश्वरी के चरित्र-चित्रण, उसकी आंतरिक पीड़ा और त्याग के बिन्दुओं को ध्यान से पढ़ना, परीक्षा में सीधा प्रश्न आता है।

• मुंशी जी के चरित्र-चित्रण और उनके व्यवहार के पीछे छिपी लाचारी व आत्मसम्मान की भावना को अच्छे से समझना, क्योंकि यह प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछा जाता है।

• सिद्धेश्वरी के चरित्र-चित्रण और 'सिद्धेश्वरी का एक से दूसरे सदस्य वेफ विषय में झूठ बोलना परिवार को जोड़ने का अनथक प्रयास था' जैसे प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं। इनपर खास ध्यान देना।

• बोर्ड परीक्षा में ऐसे प्रश्नों के उत्तर देते समय, कहानी के पात्रों से जुड़े सीधे उदाहरण (जैसे प्रमोद का शरीर, सिद्धेश्वरी की साड़ी) अवश्य लिखें।

• यह प्रश्न 'कहानी के सबसे जीवंत पात्र के चरित्र की दृढ़ता' या 'आशय स्पष्ट कीजिए' के रूप में बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। इसके प्रतीकात्मक महत्व को गहराई से समझना बहुत ज़रूरी है।

एक नज़र में रिवीज़न

› अमरकांत: शहरी-ग्रामीण, मध्यवर्ग का यथार्थ चित्रण; सहज शैली, सजीव भाषा, आंचलिक मुहावरे।

› अमरकांत: 'इन्हीं हथियारों से' (उपन्यास), साहित्य अकादमी (2007), ज्ञानपीठ (2009).

› सिद्धेश्वरी का गरीबी में परिवार को जोड़े रखने का संघर्ष।

› सिद्धेश्वरी: गरीबी में परिवार हेतु आंतरिक पीड़ा, भूख-प्यास का त्याग।

› मुंशी जी की बेरोजगारी, हताशा, भोजन के प्रति अजीब व्यवहार, सिद्धेश्वरी का झूठ - आत्मसम्मान हेतु।

› सिद्धेश्वरी का झूठ परिवार को जोड़ने और भूख छुपाने का प्रयास।

› पात्रों के शारीरिक/पहनावे के वर्णन से गरीबी का सजीव चित्रण।

› सिद्धेश्वरी के आँसू और रोटी बाँटना: त्याग, बेबसी, संघर्ष का प्रतीक।